# कानथम्मा

## एक निर्माण मजदूर औरत की कहानी

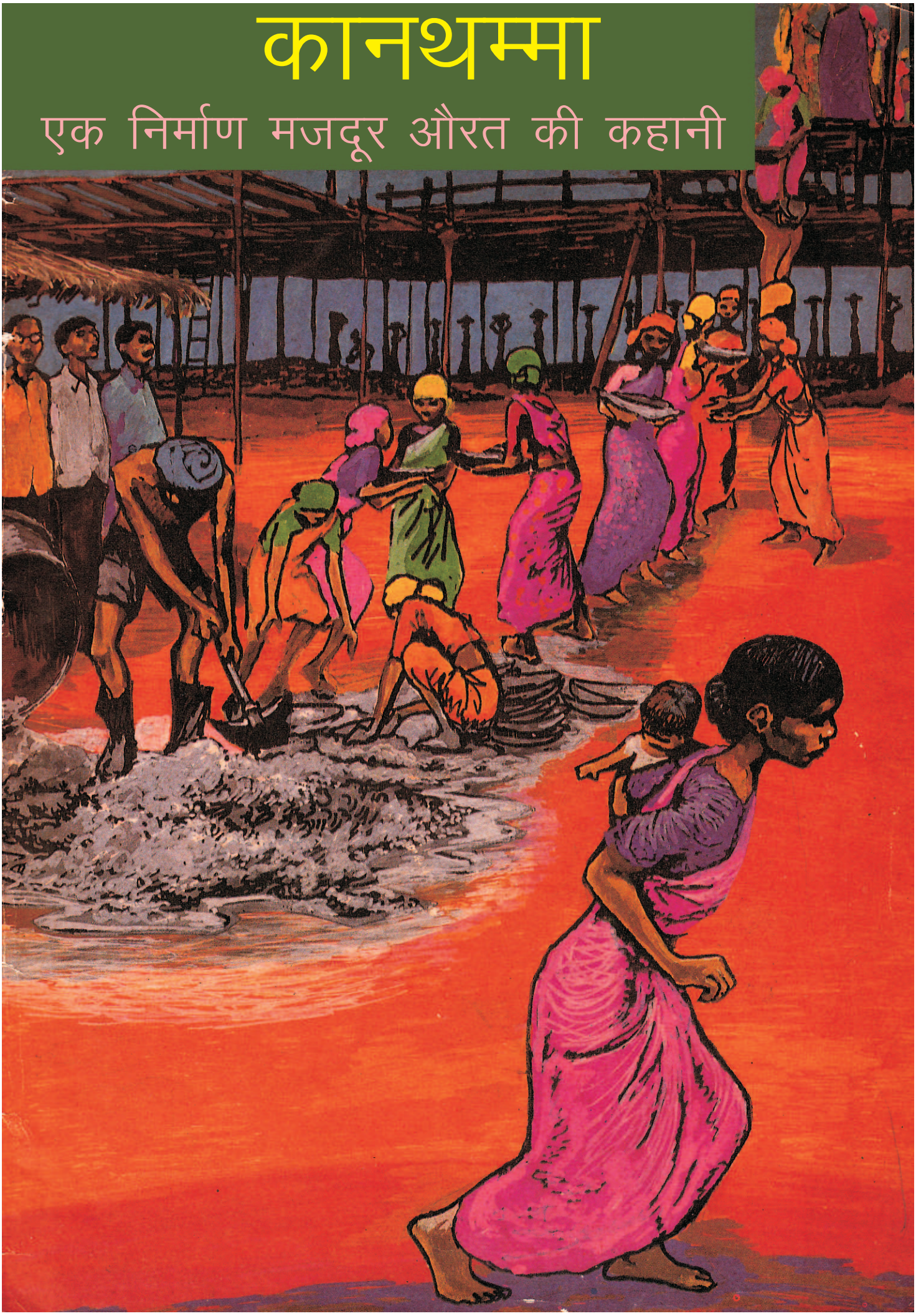

# कानथम्मा

## एक निर्माण मजदूर औरत की कहानी

लेखकः जे एन सीता
चित्रः मिथादिर
हिन्दी अनुवादः अरविन्द गुप्ता

ICRA
Bangalore
1986

कानथम्मा गहरी नींद से चौंक कर उठी. वो आज बहुत देर तक सोई थी. यह वो तुरंत समझ गई.
सूरज आसमान में ऊपर चढ़ चुका था और पास के चर्च की घंटी बज रही थी.

उसने आसपास देखा.

पार्वती और कांगी – दोनों बच्चियां अभी भी गहरी नींद में सोई थीं.

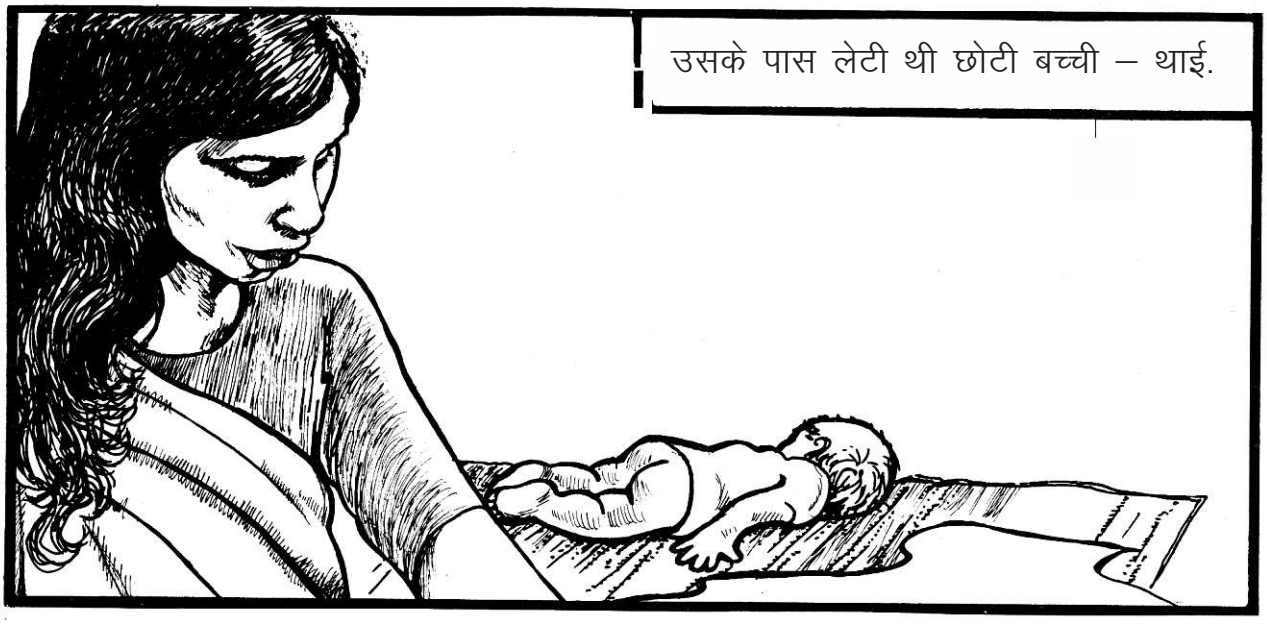
उसके पास लेटी थी छोटी बच्ची – थाई.

उसका बेटा भक्ता भी लेटा था. वो एक कामकाजी लड़का था और कैंटोनमेंट में एक माली के सहायक का काम करता था.
उसने हल्के से पार्वती को जगाया. पार्वती चूल्हा जला सकती थी.

कांथम्मा ने जल्दी से प्लास्टिक का मटका यानि बिडिगे उठाया और फिर वो नल पर पानी भरने चल दी.

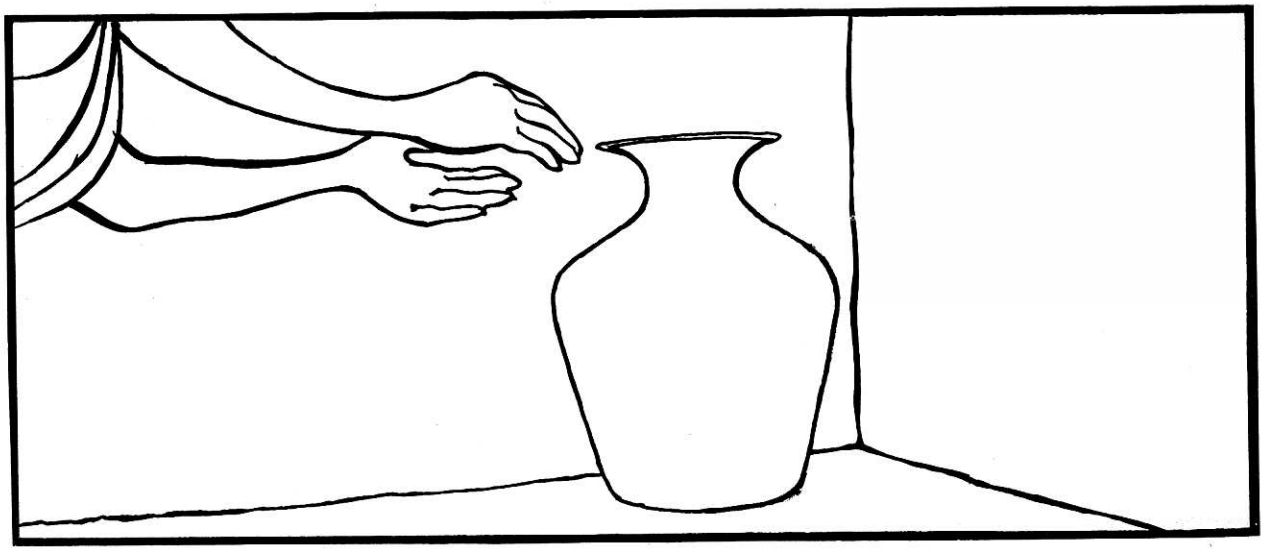

वो घर से बाहर निकली. पर यह क्या? उसे नल पर कोई और दिखाई ही नहीं दिया. अक्सर वहां 5–6 औरतें लाईन में जरूर खड़ी होती थीं.

अक्कवा वहां पर थी.

तुमने उस ऑटोरिक्षा की आवाज नहीं सुनी? आज से नल में पानी आने का समय बदल गया है. वो उसी का ऐलान कर रहा है. आज से पानी सिर्फ शाम को ही आएगा.
पर मैं शाम को ही घर वापस पहुचूंगी. तब खाना बनाने के लिए पानी कहां से आएगा?
कनथम्मा, अपनी आलसी बेटी को पानी लाना सिखाओ. उसे कानवेन्ट स्कूल में भेजने से क्या होगा? वैसे पढ़ाई से ही क्या फायदा?
पर कानथम्मा ने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया.

पानी कहां से लाऊं? वो उसके बारे में सोचने लगी. चर्च का कुआं उसके घर से कुछ दूर था. अगर इतनी देर में छोटी बच्ची नींद से उठ गई तो? वैसे पार्वती वहां जा सकती थी परंतु उसके लिए भरा मटका उठा कर लाना बहुत मुश्किल था. इसलिए उसने खुद वहां जाने की ठानी.

वो दौड़ती–दौड़ती चर्च में पहुंची.

भाग्यवश वहां कुएं पर कोई नहीं था. शायद सब लोग अंदर प्रार्थना कर रहे थे.

वो कुएं पर गई और उसने रस्सी को ढील दी.
उसका मटका एक छपाके के साथ पानी से टकराया.

फिर कहीं से एक आवाज आई.

कौन है?

सिस्टर ने उसे देख लिया था.

सिस्टर को देख कानथम्मा कुछ झेंप गई.

मैं हूं सिस्टर. पानी का समय आज से बदल गया है और घर में खाना बनाने के लिए एक बूंद भी पानी नहीं है.

सिस्टर, मैं आज से पार्वती को स्कूल नहीं भेज सकूंगी. उसे पानी भर कर लाना पड़ेगा. भक्ता यह नहीं करेगा क्योंकि वो नौकरी करता है.

सिस्टर अनीता समझ गयीं. पर वो चुप रहीं.

कानथम्मा जल्दबाजी में घर चली. हड़बड़ में काफी पानी छलक कर बह गया.

उसने ठीक ही सोचा था. बच्ची उठ गई थी और चूल्हे के पास रेंग रही थी.

बाकी बच्चे अभी भी सोए थे.

पार्वती! आलसी लड़की जल्दी उठ!

कानथम्मा गुस्से में चिल्लाई.

आज स्कूल मत जाना. दोपहर को नल से पानी भर कर लाना.
वैसे भी स्कूल जाने से क्या फायदा?

फिर कांगी को स्कूल कौन लेकर जाएगा?
अगर वो खुद नहीं जा सकती तो फिर उसका भी स्कूल बंद!
पार्वती रोने लगी.

खाना बनाने के बाद कानथम्मा ने सबसे पहले भक्ता को खाना परोसा.

उसके बाद उसने पार्वती और कांगी को खाना दिया.

कानथम्मा ने भक्ता को दोपहर के लिए खाने का डिब्बा भी दिया.

फिर उसने छोटी बच्ची को कुछ रागी खिलाई. बाद में अपने लिए खाना लेकर वो तेजी से काम पर दौड़ी.

कानथम्मा घर से दौड़ते हुई निकली,
पर फिर भी उसे देर हो चुकी थी.

रोज जहां टेम्पो रूकती थी आज
वहां उसे कोई खड़ा हुआ नहीं दिखा.

टेम्पो छूट जाने से आज उसे बस
का भाड़ा भरना पड़ेगा और ठेकेदार
की गालियां भी खानी पड़ेंगी.

हां, टेम्पो छूट
गई थी.

कानथम्मा बस के इंतजार में खड़ी थी. सड़कों पर अब काफी भीड़ थी. बहुत सी औरतें अपने–अपने काम पर जाने की जल्दी में थीं.

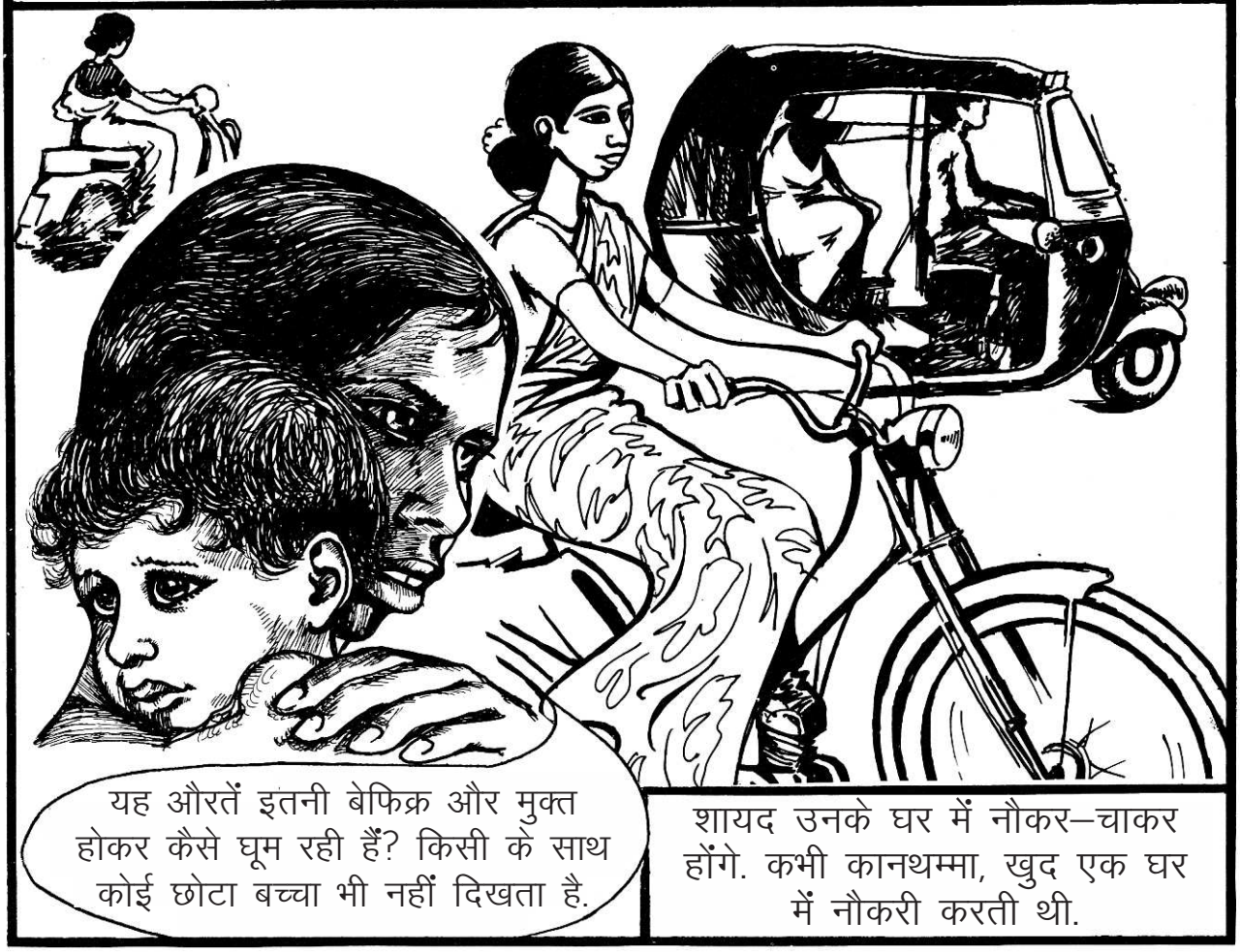

यह औरतें इतनी बेफिक्र और मुक्त होकर कैसे घूम रही हैं? किसी के साथ कोई छोटा बच्चा भी नहीं दिखता है.

शायद उनके घर में नौकर–चाकर होंगे. कभी कानथम्मा, खुद एक घर में नौकरी करती थी.

काफी देर के बाद बस आई.

वो बस में बड़ी मुश्किल से घुसी.

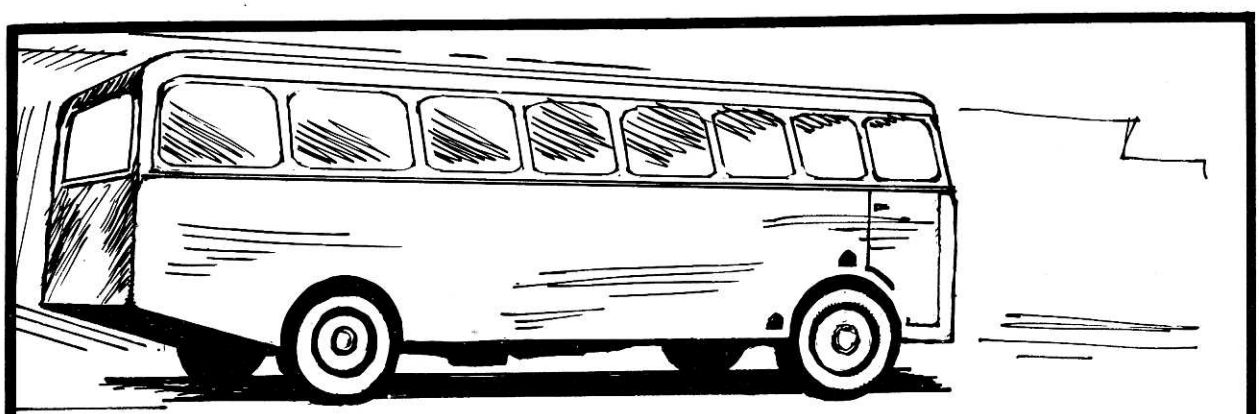

आज बिल्डिंग की साईट पर पहुंचने में उसे काफी देर हो गई.

वो बस से उतर कर सीधे काम के अड्डे की ओर दौड़ी.

काम कब का शुरू हो चुका था. औरतें और मर्द एक कतार में खड़े थे और सीमेंट के घमेले एक–दूसरे को पकड़ा रहे थे. किसी का भी ध्यान उसकी ओर नहीं गया.

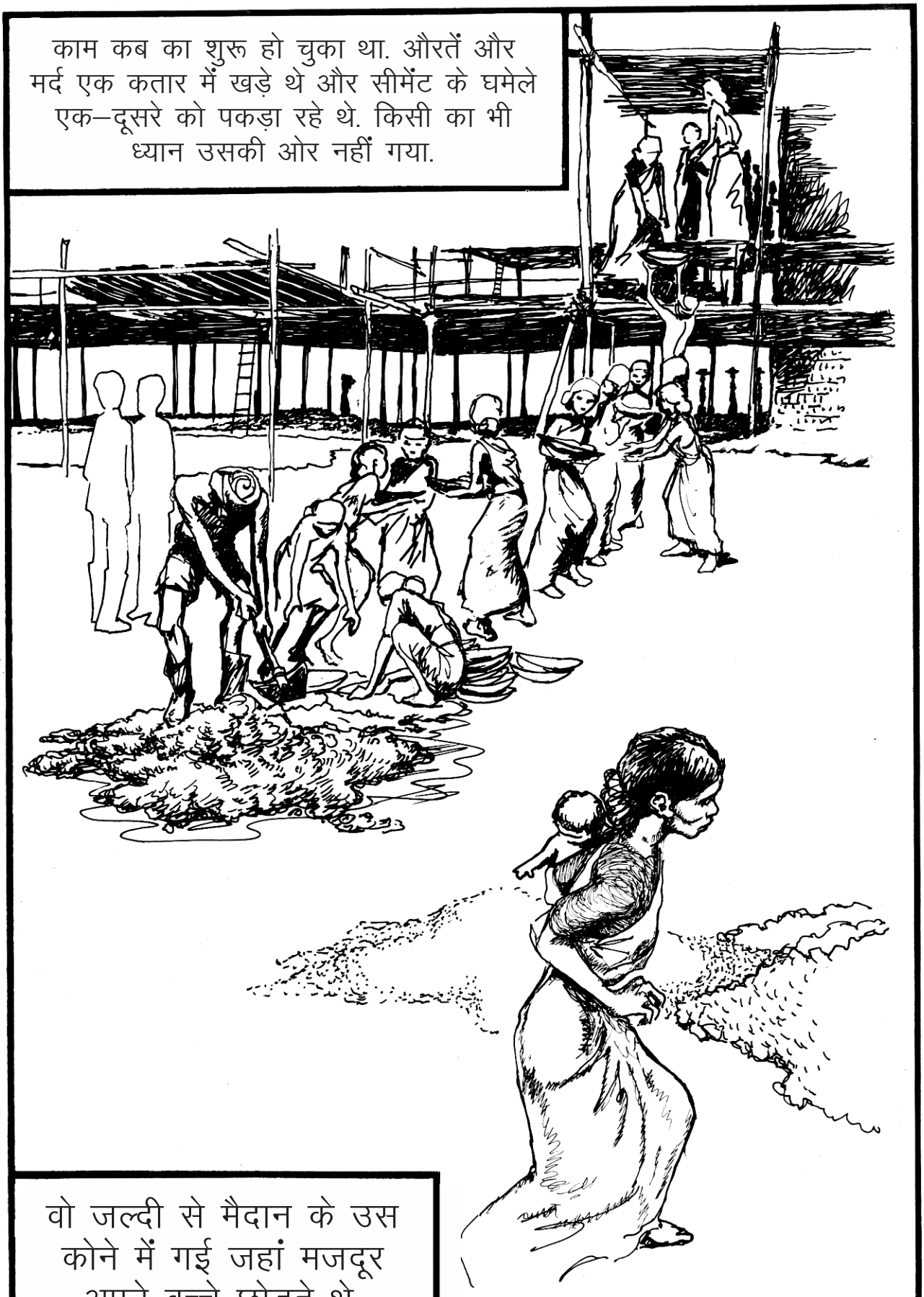

वो जल्दी से मैदान के उस कोने में गई जहां मजदूर अपने बच्चे छोड़ते थे.

उसने थाई के लिए कुछ जगह बनाई. कानथम्मा का काम खत्म होने तक थाई को वहीं रूकना था.

फिर कानथम्मा ने अपने सिर पर एक कपड़ा लपेटा और वो मजदूरों की कतार में अपने स्थान पर गई. पर ठेकेदार ने उसे पहले ही देख लिया था.

कानथम्मा चुप रही. ठेकेदार उसके पैसे काट सकता था. चुप ही रहना अच्छा था नहीं तो फिर वो और ज्यादा पैसे काटता.

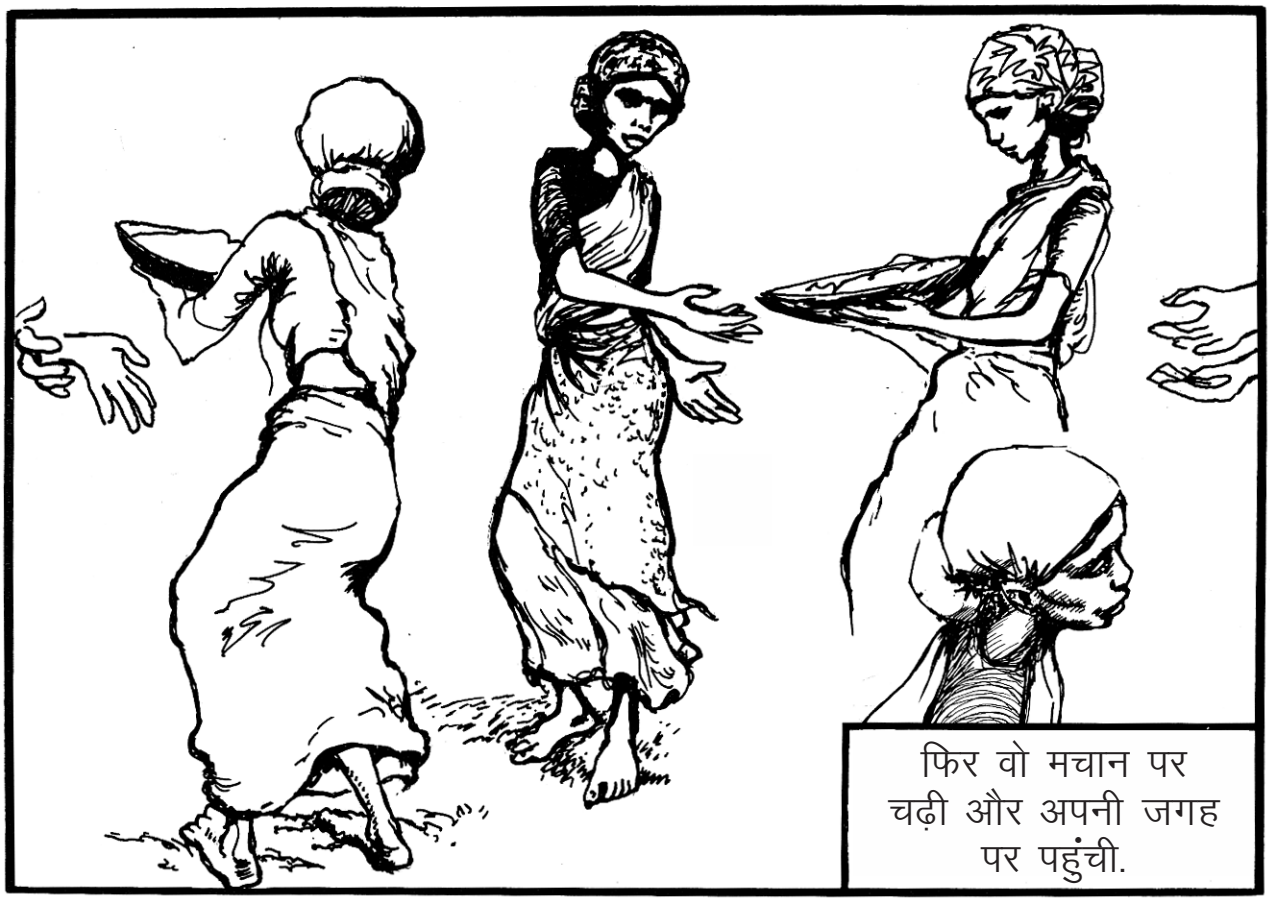
फिर वो मचान पर
चढ़ी और अपनी जगह
पर पहुंची.

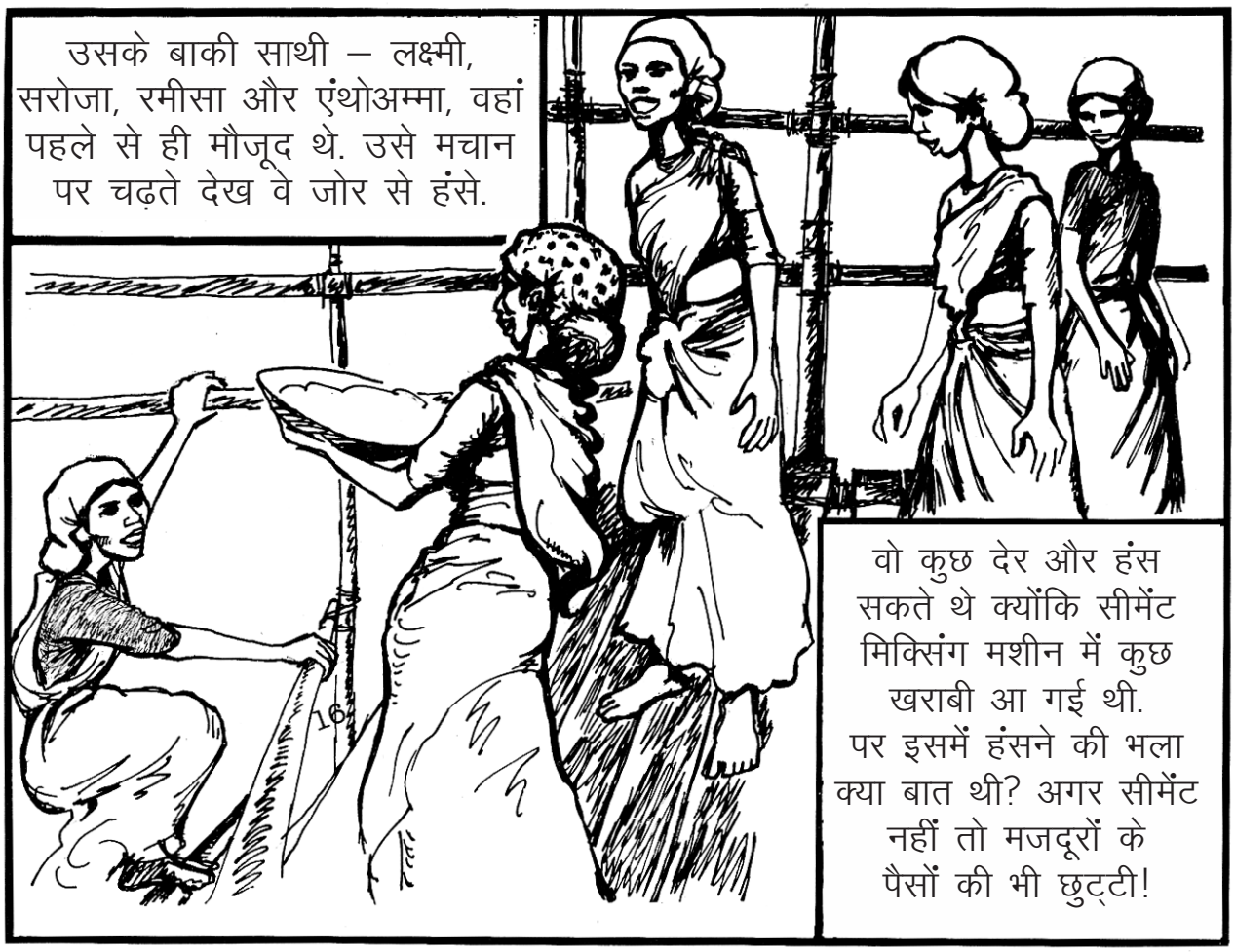
उसके बाकी साथी – लक्ष्मी,
सरोजा, रमीसा और एंथोअम्मा, वहां
पहले से ही मौजूद थे. उसे मचान
पर चढ़ते देख वे जोर से हंसे.
वो कुछ देर और हंस
सकते थे क्योंकि सीमेंट
मिक्सिंग मशीन में कुछ
खराबी आ गई थी.
पर इसमें हंसने की भला
क्या बात थी? अगर सीमेंट
नहीं तो मजदूरों के
पैसों की भी छुट्टी!

स्टील के तार कानथम्मा के तलुओं में चुभ रहे थे. वो खड़े होने के लिए कुछ ढूंढ रही थी. कुछ देर बाद उसे लकड़ी के दो टुकड़े मिले.

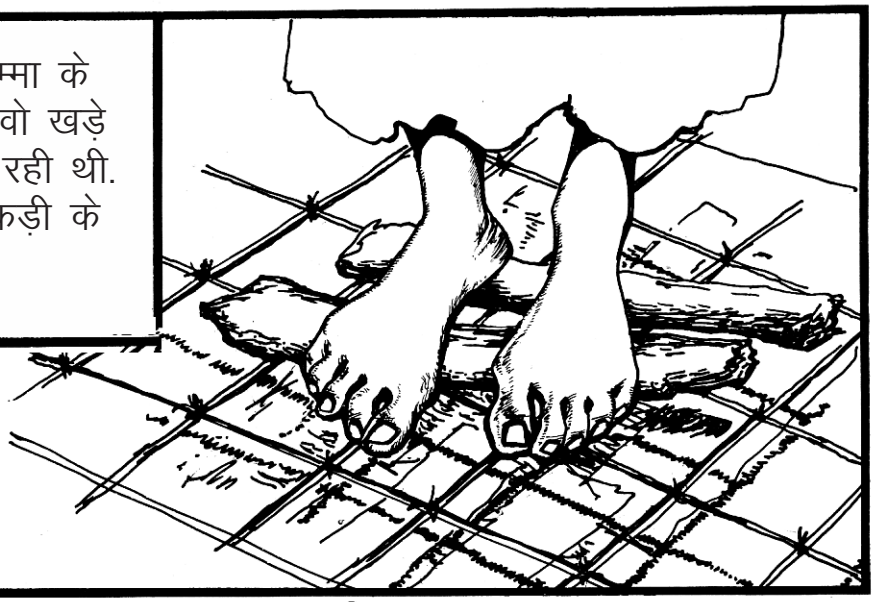

थोड़ी देर बाद सीमेंट के घमेले तेजी से ऊपर आने लगे.

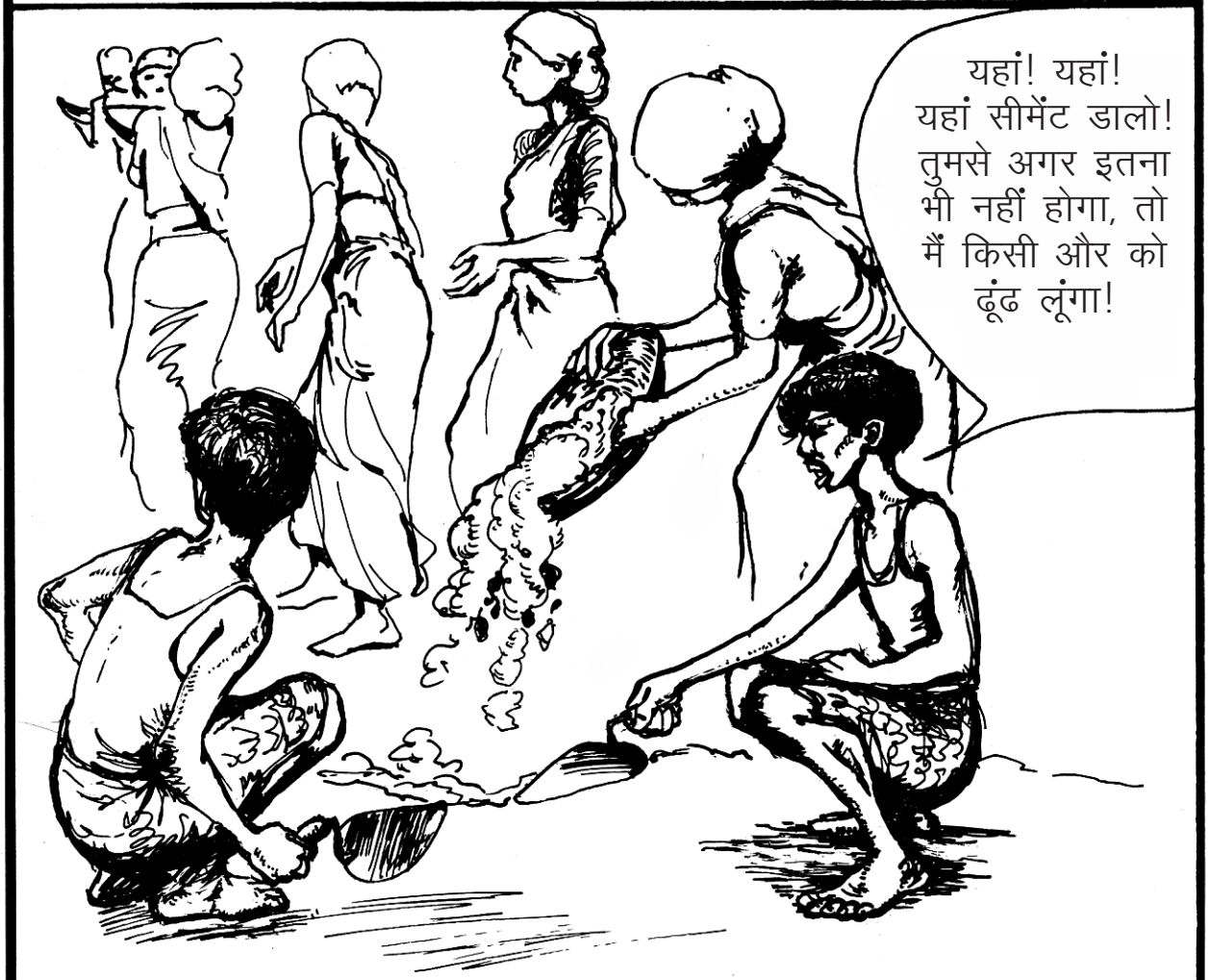


मिस्त्री उस दिन खराब मूड में था.

औरतें बहुत तेजी से काम कर रहीं थीं.
दिन का कोटा पूरा नहीं करने पर उनके पैसे कटते.

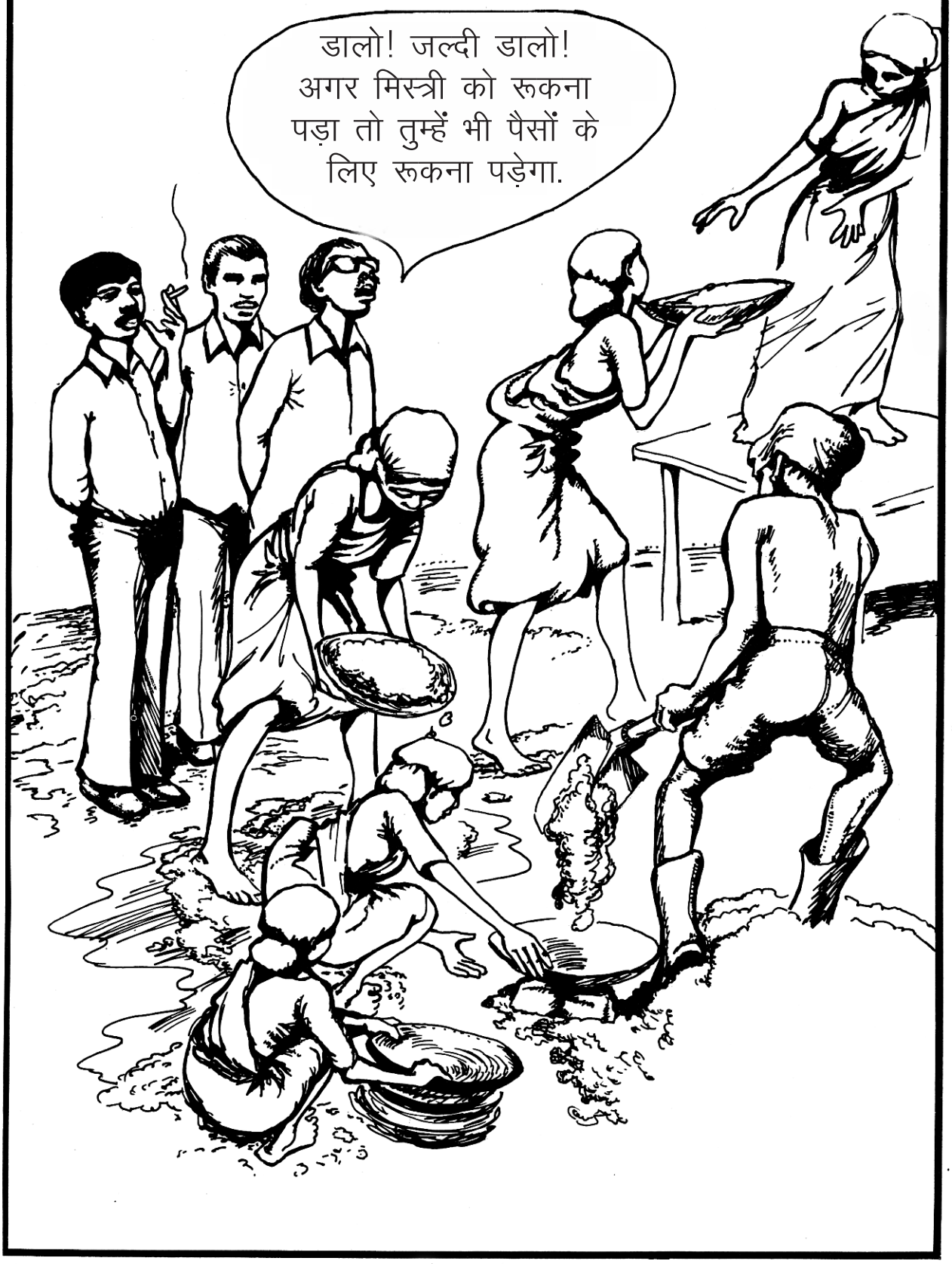

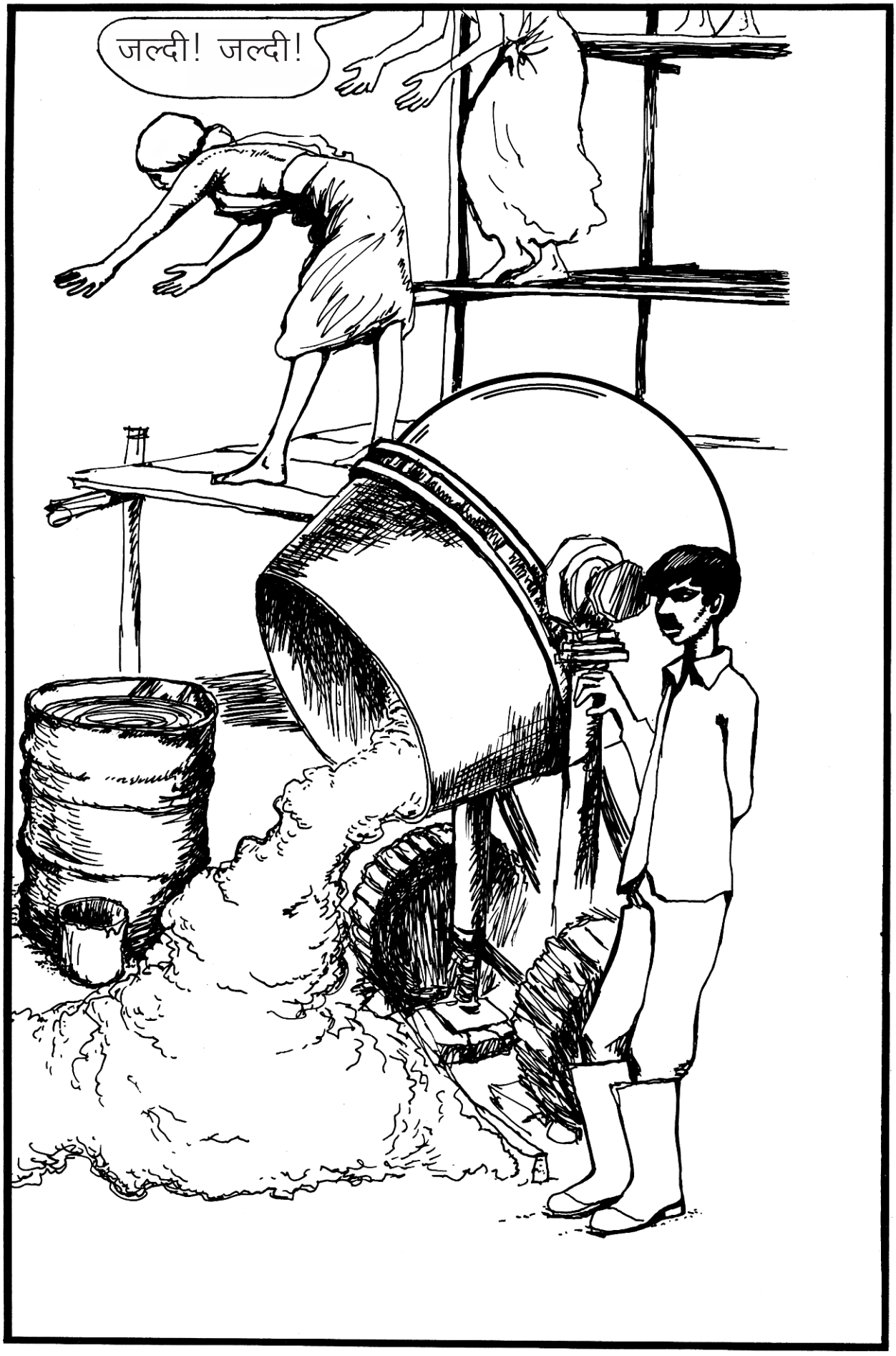
जल्दी! जल्दी!

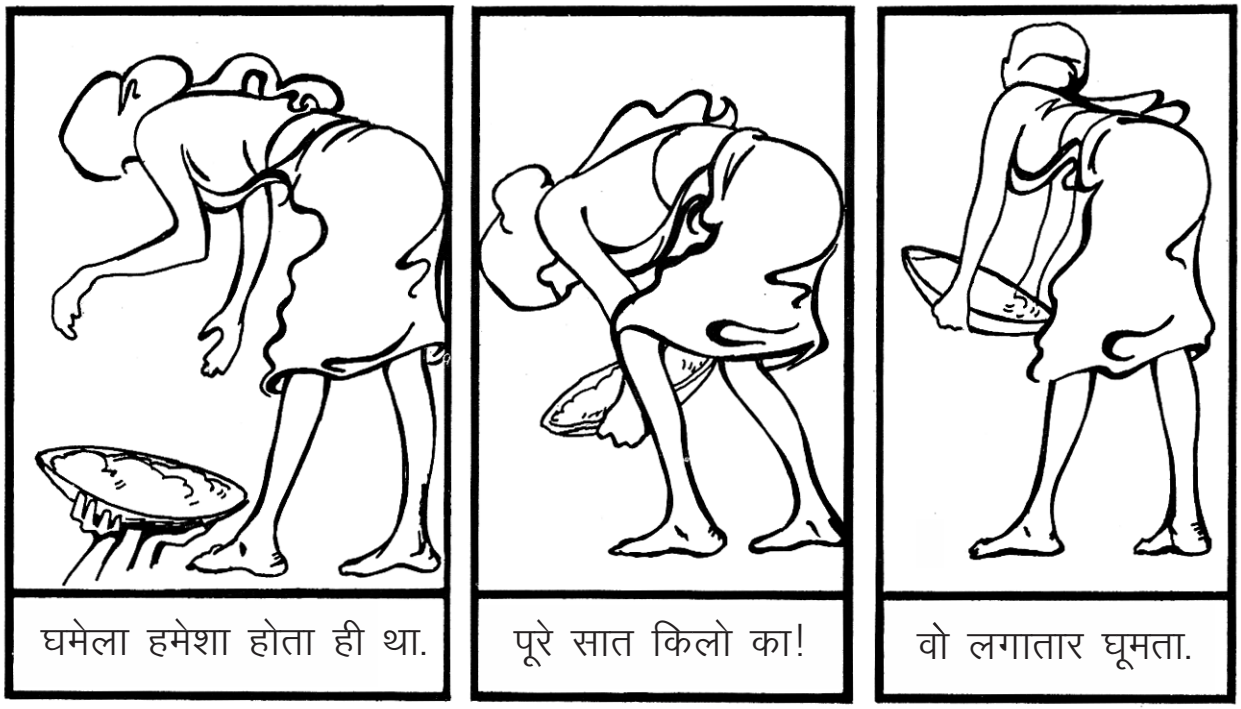


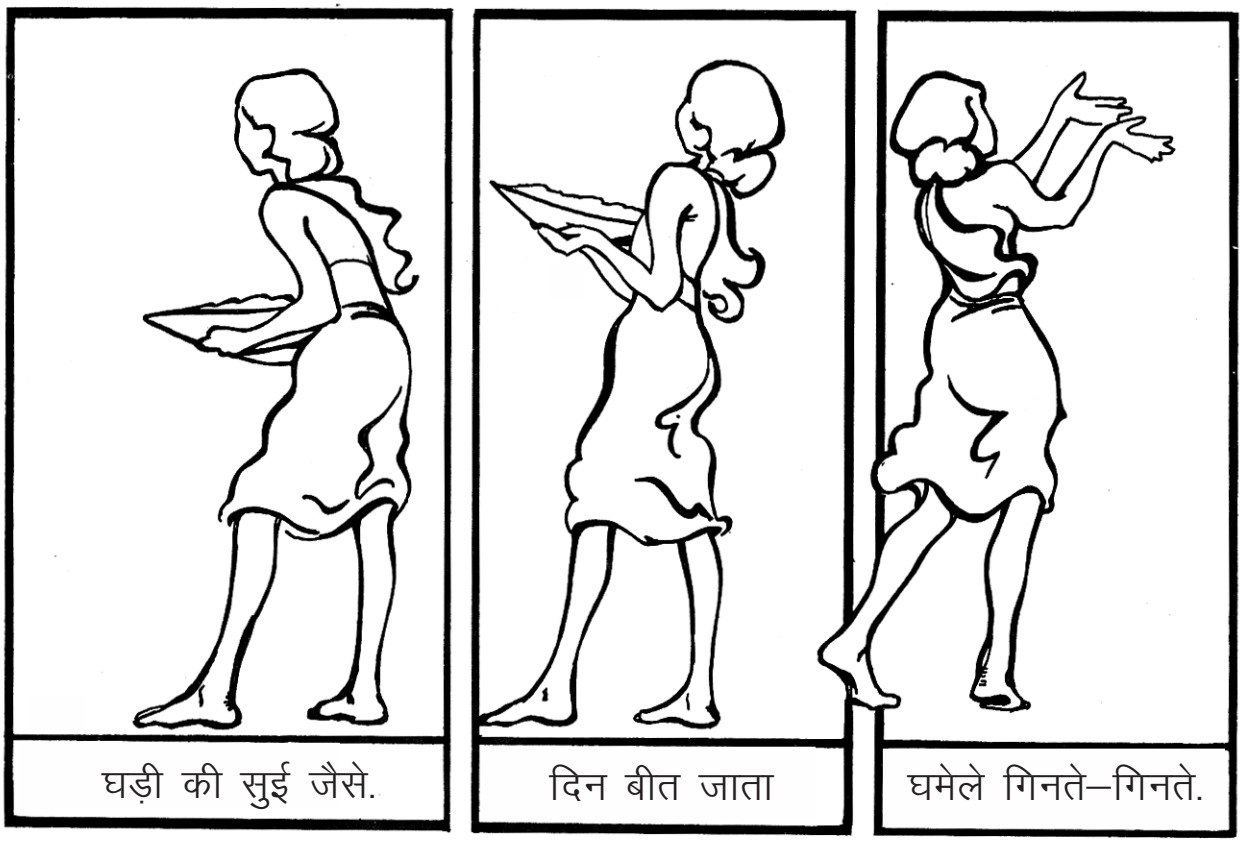


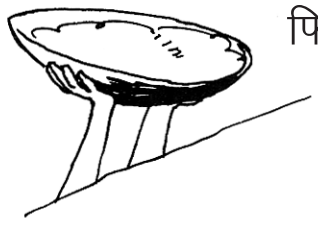

फिर भी एक घमेला हमेशा सामने मौजूद होता!

सीमेंट लगातार आता रहता.
बिना रूके, बिना थमे.
जब दिन का कोटा खत्म होता,
तभी पूरे दिन के पैसे मिलते!

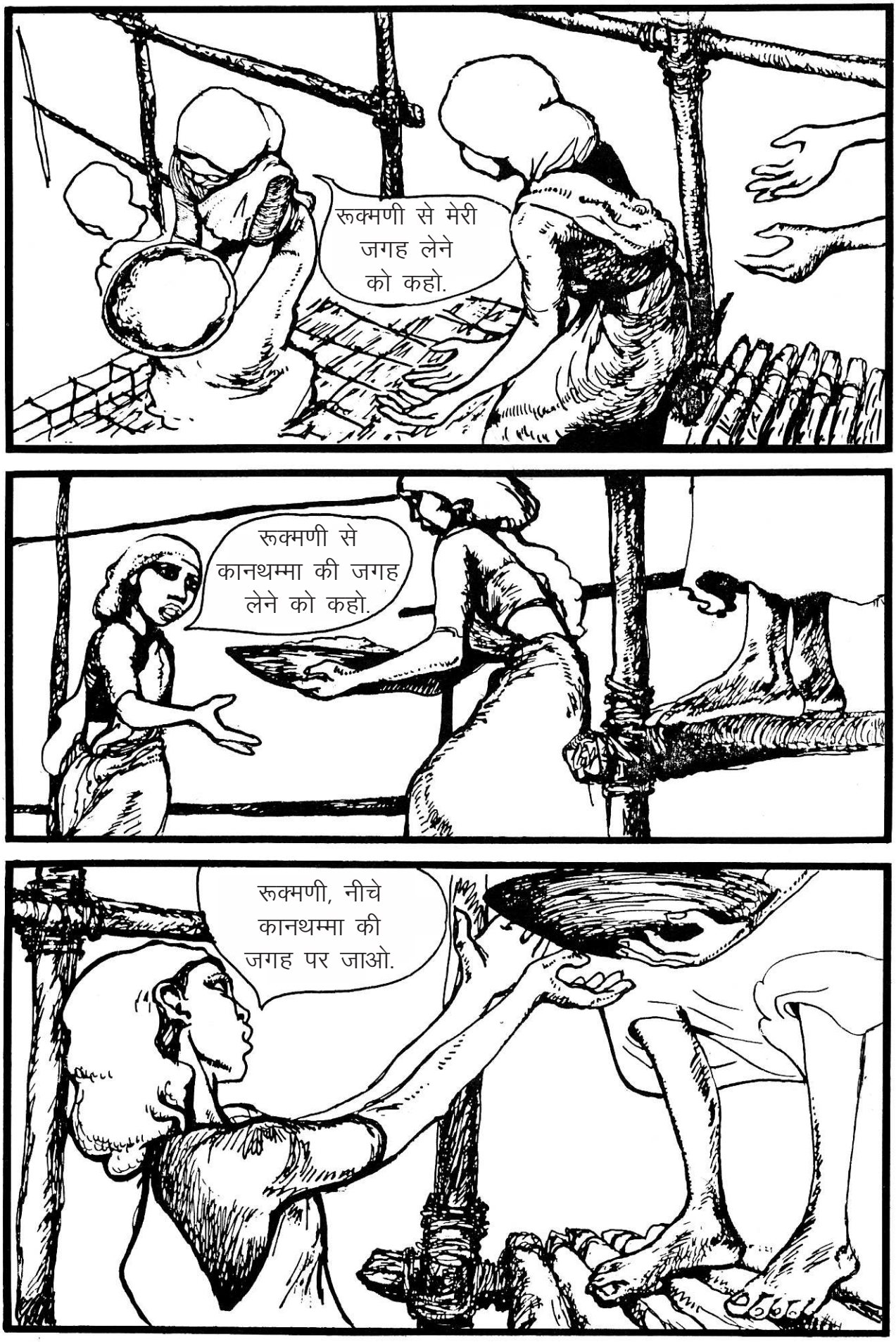
रूक्मणी से मेरी जगह लेने को कहो.
रूक्मणी से कानथम्मा की जगह लेने को कहो.
रूक्मणी, नीचे कानथम्मा की जगह पर जाओ.

रूक्मणी ने नीचे उतर कर कानथम्मा की जगह ली.

फिर कानथम्मा मचान से उतरी.

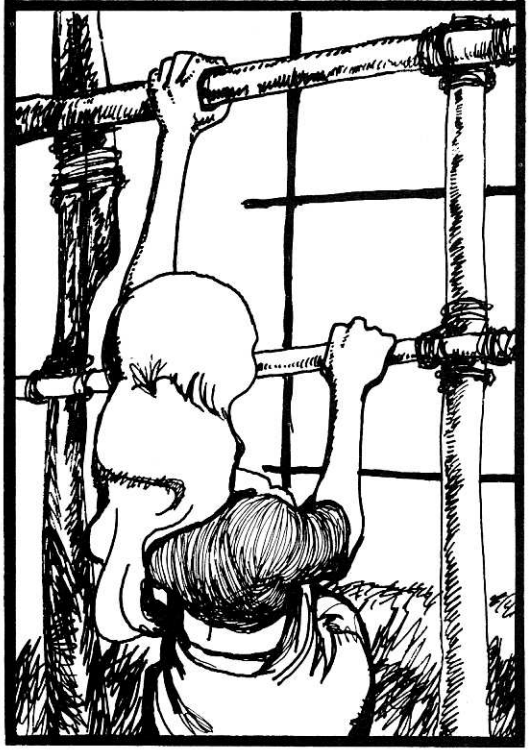

और उसने थाई को दूध पिलाया.

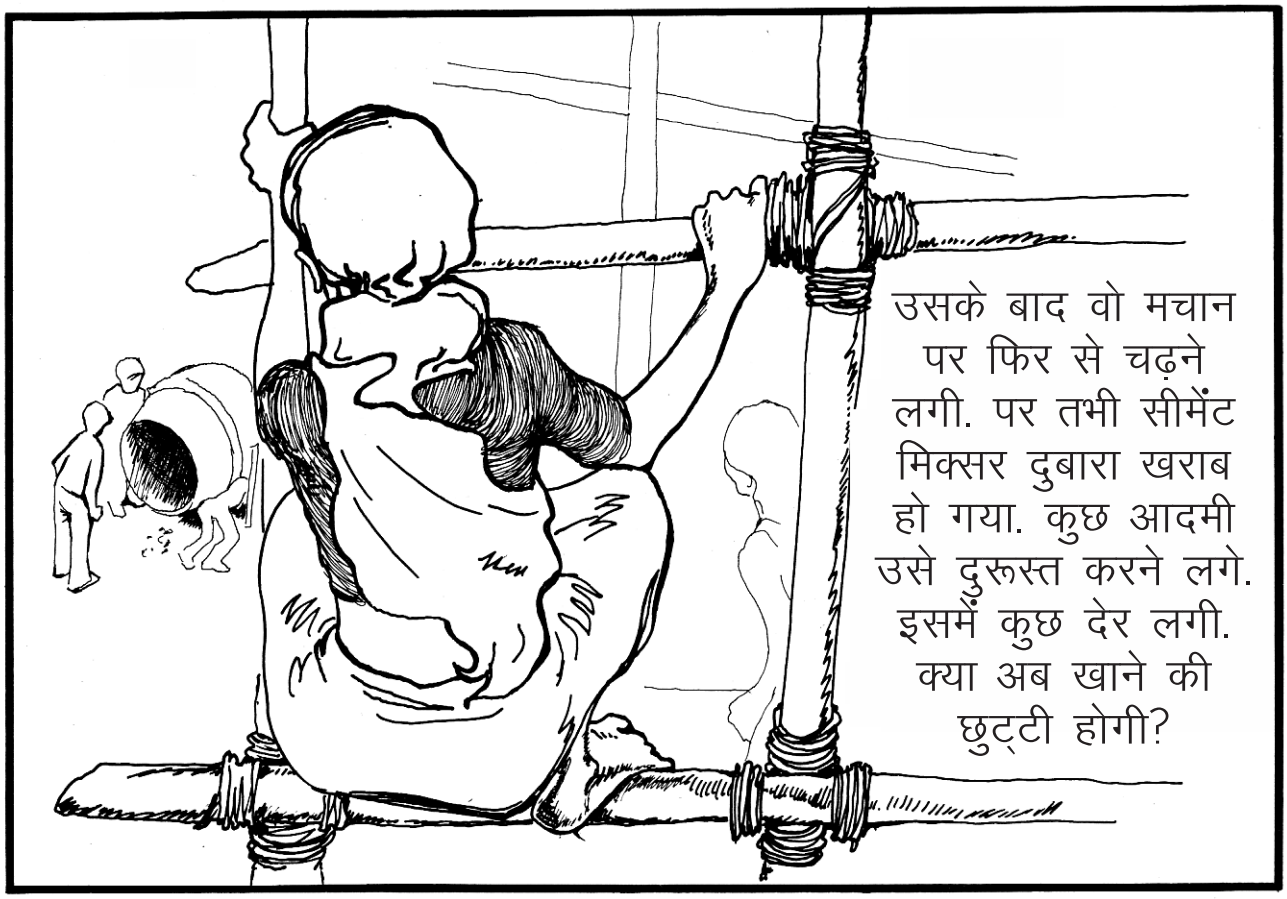
उसके बाद वो मचान पर फिर से चढ़ने लगी. पर तभी सीमेंट मिक्सर दुबारा खराब हो गया. कुछ आदमी उसे दुरूस्त करने लगे. इसमें कुछ देर लगी. क्या अब खाने की छुट्टी होगी?

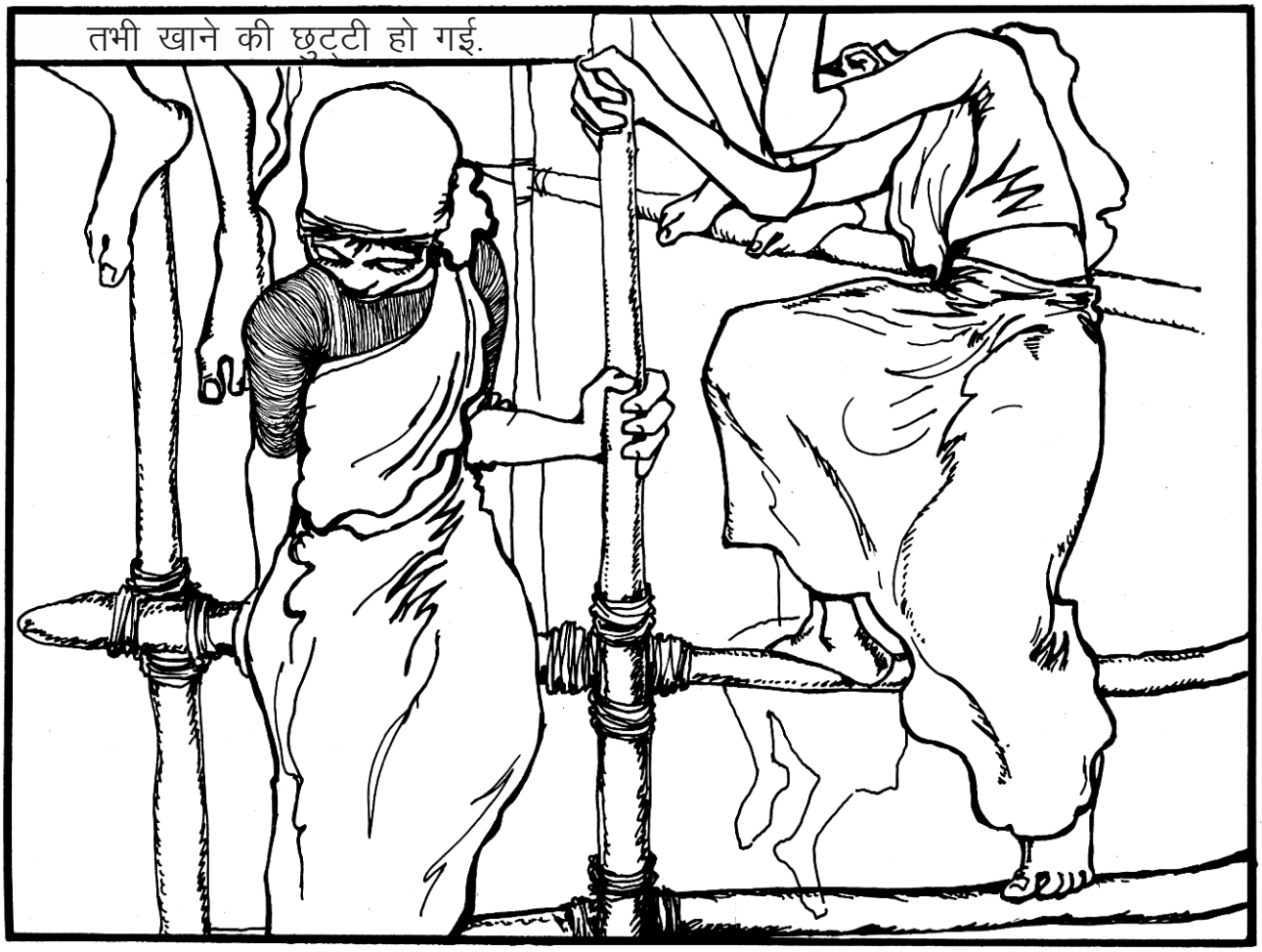
तभी खाने की छुट्टी हो गई.

खाना खाते समय कानथम्मा ने सरोजा की कहानी सुनी.

बहुत तू–तू मै–मै हुई और अंत में पति ज्यादा मांग न करने को राजी हो गया.
तभी एक एक्सीडेंट हुआ.

लड़की की साड़ी में आग लगी और वो उसे बुझा नहीं पायी.

उसने बाहर निकलने की कोशिश की, पर दरवाजा बाहर से बंद था.

लपटों ने जोर पकड़ा.

वो बहुत चीखी–चिल्लाई, उसने खूब दरवाजा पीटा. पर किसी ने उसकी बात नहीं सुनी.

लोग कहतें है वो कोई एक्सीडेंट नहीं था. मिट्टी का तेल डालकर उस औरत को जलाया और फिर दरवाजे में ताला लगाया गया.

रमीजा बोली:

एक औरत हमारे घर के बिल्कुल पास रहती थी. उसके केवल एक छोटी बच्ची थी. बाद में वो औरत बीमार पड़ी. वो अस्पताल गई जहां उसकी जांच हुई.

डाक्टरों ने जांच के बाद कहा कि उसके और कोई बच्चा नहीं होगा.

इससे उसका पति बहुत नाराज हुआ.

मैं चाहता था कि तुम एक लड़का पैदा करो. लगता है कि तुम अब वो नहीं कर पाओगी!

मुझे अब तुम जैसी बीबी की जरूरत नहीं है. लड़की लेकर मेरे घर से तुरंत निकल जाओ. लड़की और खुद को जहन्नुम में डालो.

उस रात वो औरत एक कुएं के पास गई. वो जिले का सबसे गहरा कुंआ था.

फिर लड़की को कसकर पकड़कर वो कुएं में कूद गई.

पुलिस ने अनुसार उस औरत ने खुदकशी की.

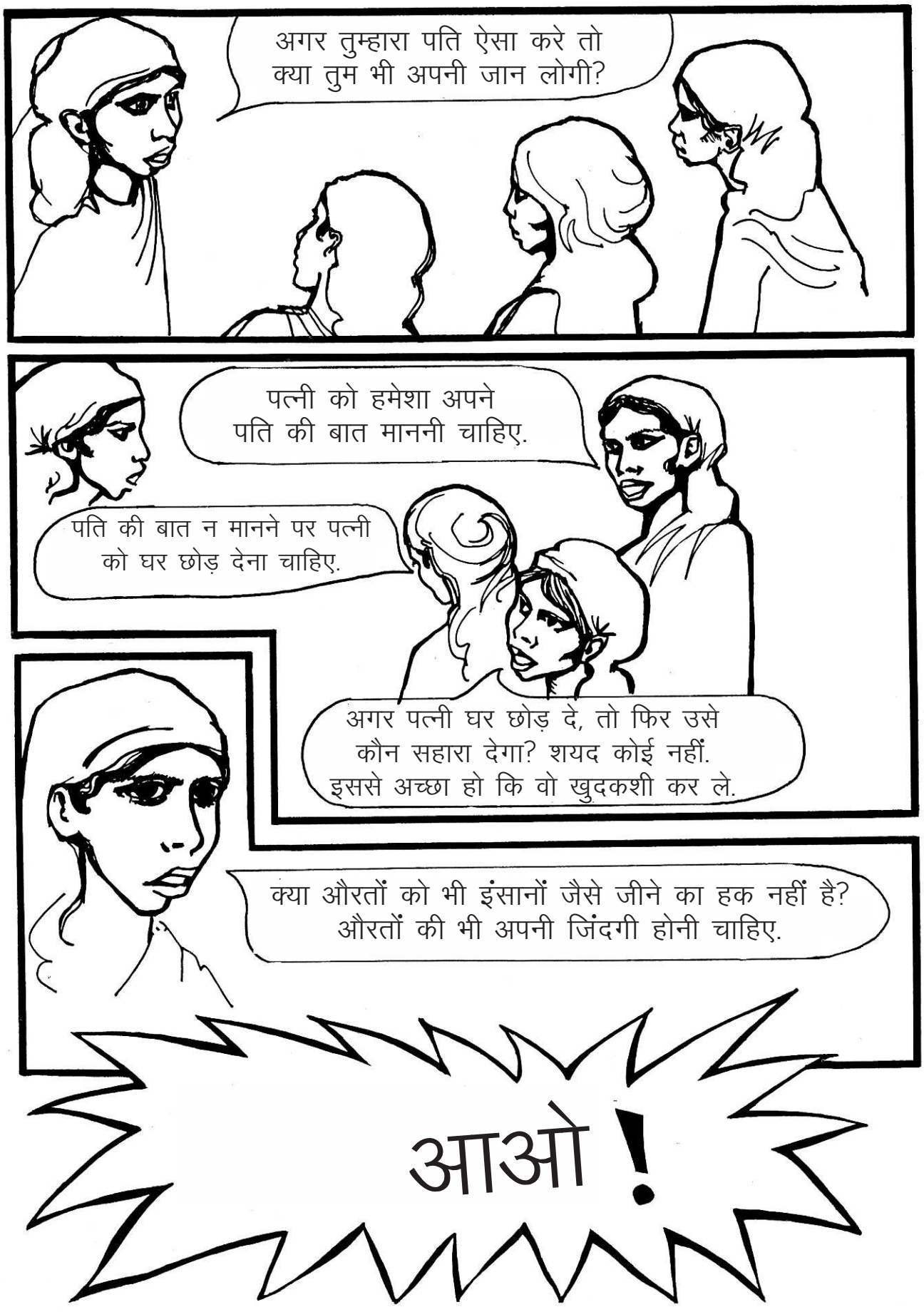


ठेकेदार उन्हें बुला रहा था.

खाना खत्म हुआ. सभी वापस काम पर गए.
तुम दोनों फर्शी पत्थर उठाकर इधर रखो.

शुरू में उसे काम बहुत कठिन लगा. ट्रक भर फर्शी के पत्थर उठाते–उठाते कानथम्मा के कंधे दुखने लगते थे. पर धीरे–धीरे वो इस कठिन काम को करने की आदी हो गई.

रूक्मणी ने कहाः
हम लोग फर्शी पत्थर जैसे ही हैं.
क्या मतलब?

उनके लिए हम पत्थर जैसे ही हैं!

वो रोज हमें रौंदते हैं.
ऐसी बातें मत करो.

हम धूप में पसीना बहाते हैं, वो बस बैठे–बैठे हमें घूरते हैं.
उन्हें निगरानी तो रखनी ही पड़ेगी. अपने धंधे के बारे में उन्हें सोचना ही पड़ेगा.

धंधा? मुनाफा कहो!

हम जैसी औरतों की मेहनत के बल पर ही ठेकेदारों का मुनाफा टिका है!

पर उस रात कानथम्मा ने रूक्मणी की बात पर खूब सोच–विचार किया.

बाकी दिन बहुत धीरे–धीरे करके बीता. अंत में एक खुशखबरी सुनने को मिली. सब लोग आओ – मजदूरी के पैसे आ गए हैं.

पूरे हफ्ते की मजदूरी बकाया थी.

उसके लिए इंतजार करना ठीक भी था.

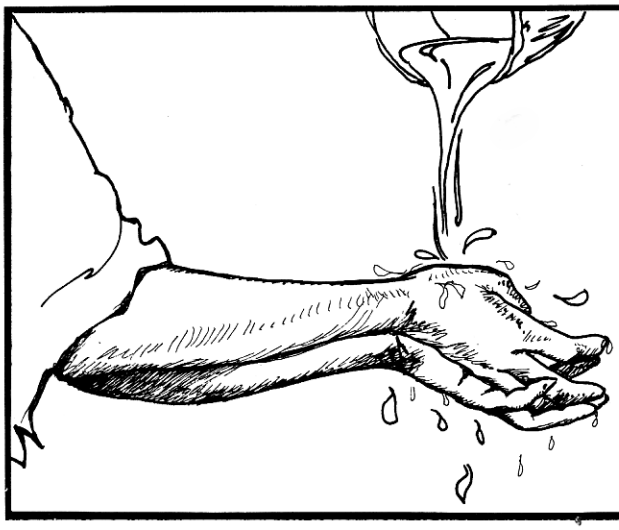

देखो, कानथम्मा आज रात तुम्हारा मर्द तुमसे जरूर मिलने आएगा.

कानथम्मा का पति कनअप्पन शराबी था और अक्सर घर से गायब रहता था.

मजदूरी लेने के लिए सभी औरतें एक लम्बी लाइन में खड़ी हो गयीं.

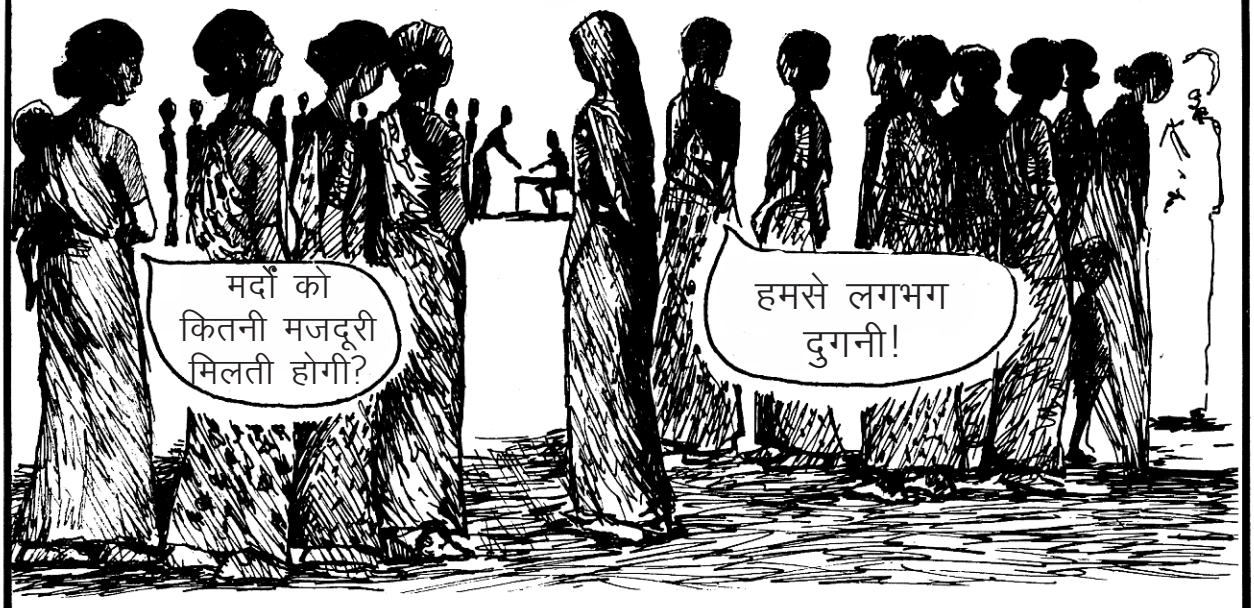

फिर औरतों की कतार में कुछ शोर सुनाई दिया.

यह क्या!

शोर रूक्मणी ने मचाया. क्यों? ठेकेदार ने उसकी पीठ सहलाई थी और उसे बदचलन कहा था. एक गिरी हुई औरत को भला इस पर क्या आपत्ति हो सकती थी?

बदले में रूक्मणी ने ठेकेदार पर थूका.

उससे ठेकेदार एकदम झल्ला गया.

अच्छा! तुझे कोई मजदूरी नहीं मिलेगी!

उसे बाहर निकालो!
कुछ औरतों ने रूक्मणी को वहां से हटाया.

बूढ़ी औरतों ने ठेकेदार को मनाने की कोशिश की.
चुप रहो! इस बारे में बातें बंद करो, नहीं तो किसी को पैसे नहीं मिलेंगे.

सभी औरतों ने चुप रहना ही ठीक समझा.

जब कानथम्मा की बारी आई, तो उसे जो भी मिला वो उसने ले लिया. ठेकेदार ने उसकी मजदूरी में से चार रूपए काट लिए थे.

वो झगड़ा करने का समय नहीं था.

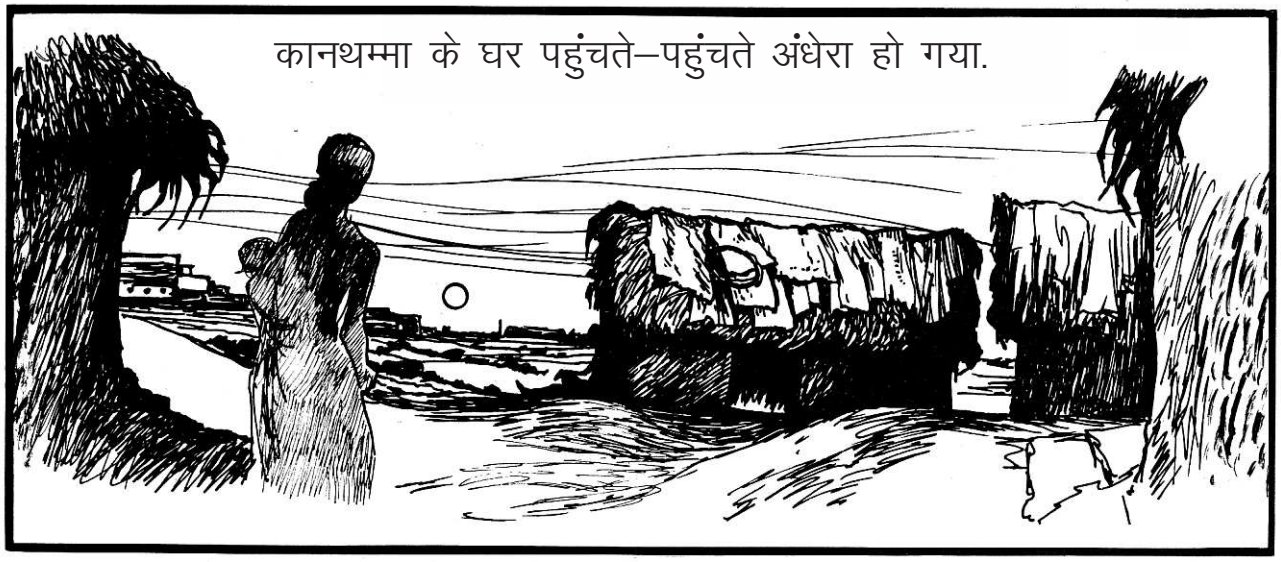
कानथम्मा के घर पहुंचते–पहुंचते अंधेरा हो गया.

कानथम्मा ने घर के लिए थोड़ा सामान और बच्चों के लिए कुछ मिठाई खरीदी.
लक्ष्मीअम्मा भी उसके साथ थी.

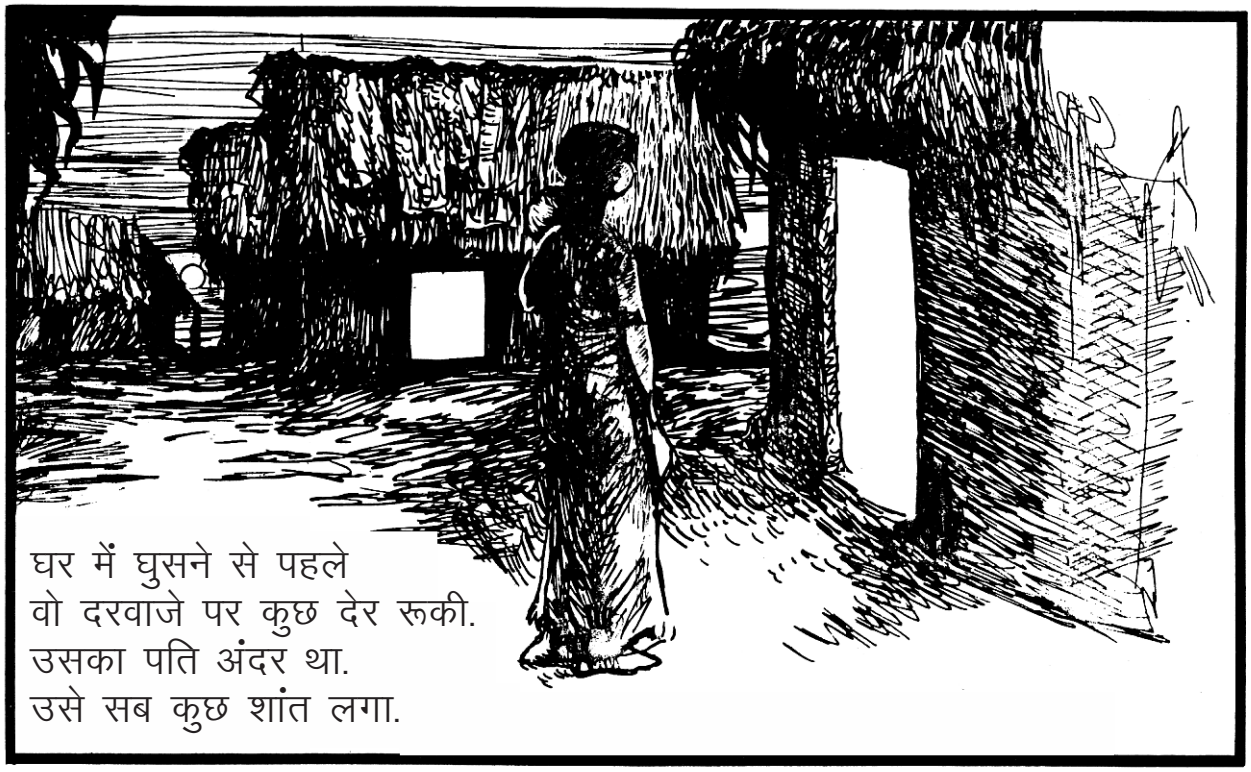

घर में घुसने से पहले
वो दरवाजे पर कुछ देर रूकी.
उसका पति अंदर था.
उसे सब कुछ शांत लगा.

फिर उसने घर में कदम रखा.

पति जमीन पर पड़ा था.

अरे यह क्या हैं?

चमेली के फूल! क्या पति उन्हें उसके लिए लाया था?

फिर बच्चों ने मिठाई खाई.

खाना पकाते समय भक्ता ने हल्के से उसे सब कुछ बताया. तब कानथम्मा को पूरी बात समझ में आई.

पिताजी बंगले में आए और उन्होंने मेरी पूरी तनख्वाह छीन ली!

तब जाकर कानथम्मा को चमेली और मिठाई का रहस्य समझ में आया.

अम्मा!

पति जाग रहा था!

उसने उसे पानी दिया.
पति ने पिया.
तुम इतनी दुखी क्यों लग रही हो? क्या मेरे लाए चमेली के फूल तुम्हें पसंद नहीं आए?
मुझे पता है कि उनके लिए तुम्हें पैसे कहां से मिले.
यह सुनकर पति आगबबूला हो गया.
WHACK
तमाचा!

वो कुछ देर चमेली के फूलों को देखती रही. फूल अब उसके खून से रंगे थे. क्या वो सपना देख रही थी? पर पति की गुस्सैल आवाज और नाक से बहते खून ने उसे असलियत की याद दिलाई. फिर भी उसे वो एक सपना लग रहा था. पति उसे और नहीं मार सकता था. वो अब से उसे कष्ट नहीं पहुंचा सकता था. पहले भी ऐसा कई बार हुआ था. पर अब वो पक्की हो चुकी थी. उसे इंतजार था उस दिन का, जब वो उससे लड़ पाएगी. उसमें लड़ने की वो ताकत थी – जो शारीरिक ताकत से कहीं ज्यादा शक्तिशाली थी.